खोया हुआ हार

ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्लिखित

सदियों पहले की बात है। भारत में एक धनवान महिला रहा करती थी। शहर के चौराहे पर उसका दो मंज़िला मकान था और जब मौसम अच्छा होता था, जो कि अकसर होता था, तब उसे बालकनी के दरवाज़े खुले रखना पसन्द था। इस तरह, अगर शहर में कोई रोमांचक घटनाएँ घट रही हों तो वह आसानी से सुन पाती।

एक दिन वह महिला स्नान कर रही थी—गरम भाप में घुलती चमेली के इत्र की खुशबू का फ़ुरसत से मज़ा ले रही थी—तभी बाहर गूँजती आवाज़ें उसके कानों में पड़ीं। पहले सुनाई दी ढोल-नगाड़ों की मस्ती भरी ढम-ढम, फिर बाँसुरी की सुरीली तान और फिर सुनाई दी एक-साथ कई सारी तुरहिइयों की धूम मचाती और खुशियाँ बिखेरती धुन। यह बड़ा ही लुभावना संगीत था, उस महिला का मन होने लगा कि वह इसे ठीक से सुने और बाहर जाकर देखे कि हो क्या रहा है।

वह झट-से टब से बाहर निकली, पानी इधर-उधर बिखर गया पर उसे इसकी कोई परवाह कहाँ थी। उसने जल्दी-से तौलिया उठाया और तैयार होने चली गई। आवाज़ें और भी तेज़ होती जा रही थीं—ऐसा लग रहा था जैसे कोई जुलूस निकल रहा हो और वह इस नज़ारे को छोड़ना नहीं चाहती थी। उसने तुरन्त ही अपनी लकड़ी की अलमारी का सुन्दर-सा दरवाज़ा खोला, उसमें उसे जो साड़ी सबसे पहली दिखी, वह निकाली और वह रेशमी साड़ी लपेट ली। आख़िरी प्लीट ठीक से डाल लेने के बाद, उसने खुद को शीशे में देखा। उसके बाल अब भी गीले थे और लटें उलझी हुई थीं, पर *अभी तो इसी से काम चलाना पड़ेगा*—और फिर वह हड़बड़ाहट में चल दी।

जब वह घर से बाहर निकली तो उसे यह देखकर तसल्ली हुई कि जुलूस बस कुछ ही क़दम आगे निकला था। वह जल्द ही भीड़ में शामिल हो गई और अगले एक घण्टे तक वह सड़कों पर इस धूमधाम भरे शोरशराबे के बीच झूमती-नाचती रही। आख़िरकार वह अपनी कुछ सहेलियों के साथ घर लौटी और वे सभी हँसती हुईं, लोट-पोट होती हुईं, उस महिला के घर में दीवान पर लेट गईं।

कुछ पल चुपचाप आराम करने के बाद, वह महिला उठकर बैठी। वह अपनी गर्दन और सीने पर हाथ फेरने लगी, पहले धीमे-धीमे और फिर जल्दी-जल्दी। उसके तो होश ही उड़ गए, वह हैरान थी।

“क्या हुआ?” उसकी एक सहेली ने चिन्तित होते हुए पूछा। “क्या तुम कुछ ढूँढ़ रही हो?”

“मेरा हार!” उसने घबराए हुए स्वर में कहा। “मेरा हीरों का हार! जुलूस के लिए निकलने से पहले मैंने उसे पहना हुआ था, और—और अब, वह नहीं है!”

“चिन्ता मत करो,” सहेली ने दिलासा देते हुए कहा। “हम ढूँढ़ने में तुम्हारी मदद करेंगे। शायद वह घर में ही कहीं हो?”

“नहीं, नहीं, मुझे पक्का याद है कि घर से निकलते समय मैंने वह पहना हुआ था!” महिला चिल्लाई। और साथ ही वह फ़र्नीचर के पीछे, कुशन उठाकर और इधर-उधर सब ओर छानबीन करने लगी। उसकी सहेलियाँ भी ढूँढ़ने लगीं।

पर उनकी कोशिशें बेकार हो गईं। महिला अपनी सहेलियों की ओर देखने लगी, उसके चेहरे पर डर साफ़ दिखाई दे रहा था। “अगर—अगर किसी ने हार चुरा लिया हो तो?”

“तुम्हारा मतलब है जुलूस में?”

महिला बोली, “हाँ! वह मेरा बहुत अनमोल हार था, और उनके पास हार खींचने का पूरा मौक़ा था। मुझे तो *यक़ीन* है कि मेरा हार किसी चोर के पास है!”

महिला फिर से दीवान पर बैठ गई, और इस नई सम्भावना के विषय में और भी गहराई से सोचने लगी। वह बच्चों की तरह रोने-बिलखने लगी।

चिड़चिड़ाहट में वह बोली, “वह बहुत सुन्दर था। वह मेरे ख़ानदान की विरासत थी। अगर मेरे घरवालों ने पूछा तो? मुझे नहीं पता कि मैं *क्या* बताऊँगी। ओह, वह हार मुझे कितना पसन्द था! मैं रोज़ उसे पहनती थी। और अब कोई आया और उसे ले गया—उसकी इतनी हिम्मत, तुम विश्वास कर सकती हो? या . . . या . . . या फिर हो सकता है, मेरा हार पैरों तले रौंद दिया गया हो! हाँ, अब जब मैं सोच रही हूँ, तो मुझे लगता है कि ऐसा ही हुआ होगा। तुम जानती हो कि मैं रास्ते भर यही बात कर रही थी कि कितना शोर-शराबा है, कितनी भीड़ है—”

वह इस तरह ख़ुद से बात करती जा रही थी कि तभी उसकी सहेली ने उसे रोकते हुए कहा, “वह क्या है?”

महिला ने सिसकते हुए कहा, “क्या क्या है?”

“वह,” सहेली ने महिला की ओर इंगित करते हुए कहा।

“तुम क्या—” चौंककर महिला कहने लगी और तभी उसकी सहेली उसकी ओर बढ़ी। “मैंने तो पहले ही जाँच लिया था—*अरे!*”

महिला के गले में सुनहरा-सा, चमचमाता हुआ कुछ नज़र आया, जो उसकी साड़ी की तहों के नीचे से झाँक रहा था। सहेली ने धीरे-से खींचा और वह बाहर आ गया—एक नज़ुक-सी ज़ंजीर जिसमें कई सारे सफ़ेद, गोल आकार के हीरे जड़े थे।

“मेरा हार!” महिला ने चैन की साँस ली। “मेरा हार!” उसने दोहराया, और इस बार जब वह यह समझने लगी थी कि क्या हुआ होगा तब उसकी आवाज़ और भी तेज़ व जोश भरी लगी। एक बार फिर उसके आँसू बहने लगे, पर इस बार वे खुशी के आँसू थे।

“तो इसका मतलब है कि हार कभी खोया था ही नहीं?” महिला के सँभल जाने के बाद उसकी सहेली ने मज़ाक़ में कहा।

इसका उत्तर देते समय महिला का चेहरा सौम्य था।

उसने कहा, “नहीं। मुझे लगता है वह नहीं खोया था। वह पूरे समय मेरे साथ ही था।”

यह कहानी भारत के वेदान्तदर्शन के ग्रन्थों में कथित एक पौराणिक कथा से प्रेरित है।

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।